Note : If you would like to view or download the entire book please go through home page of Jain eLibrary Website – www.jainelibrary.org and register your e-mail id (or sign in if previously registered).

Shantipath Pradarshan

Folder No.	002675
Granth Name	Shantipath Pradarshan
Author	Jinendra Varni
Publisher	Jinendra Varni Granthmala Hariyana
Edition	9
Year	2001
Pages	346

शान्तिपथ प्रदर्शन

फोल्डर नं.	००२६७५
ग्रन्थ	शान्तिपथ प्रदर्शन
मूल	जिनेन्द्र वर्णी
प्रकाशक	जिनेन्द्र वर्णीग्रन्थमाला
आवृत्ति	९
प्रकाशन वर्ष	२००१
पृष्ठ	३४६

मुख्य टाईटल
जैनेन्द्र प्रमाण कोष की रचना
मुखबन्ध
प्राक्कथन
एक सम्मति
प्रकाशकीय वक्तव्य (प्रथम संस्करण)
सम्मतियें
प्रकाशकीय वक्तव्य (नवम संस्करण)
विषय सूची
दर्शन खण्ड
अध्ययन पद्धति ---------- ५
धर्म का प्रयोजन ---------- १४
शान्ति ---------- २०
धर्म का स्वरुप ---------- २३

शान्ति मार्ग ---------- २७
तत्त्वार्थ ---------- ३४
जीव तत्त्व ---------- ३६
अजीव तत्त्व ---------- ४५
विवेक ज्ञान ---------- ४९
ज्ञानधारा कर्मधारा ---------- ५७
कार्यकारण व्यवस्था ---------- ६२
नियतिवाद ---------- ६८
आस्त्रव तत्त्व ---------- ७६
पुण्यास्त्रव ---------- ८०
बन्ध तत्त्व ---------- ९०
संवर तत्त्व ---------- ९३
निर्जरा तत्त्व ---------- ९५
मोक्ष तत्त्व ---------- ९९
सम्यग्दर्शन ---------- १०१
समन्वय ---------- १११
साधना खण्ड
साधना ---------- ११९
गृहस्थ धर्म ---------- १२७
देवपूजा ---------- १२९
गुरु उपासना ---------- १५०
स्वाध्याय ---------- १५८
संयम ---------- १६५
अहिंसा ---------- १७८
भोजन शुद्धि ---------- १८४
तप ---------- २००
दान ---------- २०८
श्रावक धर्म ---------- २१३
साधु धर्म ---------- २२०
अपरिग्रह ---------- २२८
उत्तम क्षमा ---------- २३६
उत्तम मार्दव ---------- २४२
उत्तम आर्जव ---------- २४६
उत्तम शौच ---------- २४९
उत्तम सत्य ---------- २५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तम संयम -- २५७
उत्तम तप -- २६०
ध्यान -- २७०
उत्तम त्याग -- २८१
उत्तम आकिञ्चन्य -- २८४
उत्तम ब्रह्मचर्य --- २८८
परिषहजय व अनुप्रेक्षा -- २९२
चारित्र --- ३००
सल्लेखना -- ३०३
उपसंहार --- ३०७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org